M.A. II – IIIrd Paper Unit – III

चार्वाक दर्शन की तत्त्वमीमांसा (Metaphysics)

चार्वाक दर्शन सिर्फ प्रत्यक्ष को प्रमाण मानने के कारण भौतिकवादी (Materialistic) तत्त्वमीमांसा स्वीकार करता है। चार्वाक का कहना है कि प्रत्यक्ष के माध्यम से हम सिर्फ भौतिक विश्व को ही जान सकते हैं, अतः उसकी सत्ता मानना उचित है। आत्मा और ईश्वर जैसी पारलौकिक सत्ताओं का हमें प्रत्यक्ष नहीं होता, इसलिए उन्हें स्वीकार नहीं किया जा सकता।

जगत् सम्बन्धी विचार

चार्वाक ने जगत् के सम्बन्ध में वस्तुवादी (Realist) मत को स्वीकार किया है। चार्वाकों के अनुसार जगत् यथार्थ है क्योंकि वह इन्द्रिय प्रत्यक्ष से ज्ञात होता है। जगत् चार महाभूतों से उत्पन्न है – अग्नि, जल, वायु तथा पृथ्वी – "पृथिव्यप्तेजोवायुरिति तत्त्वानि"। आकाश महाभूत नहीं है क्योंकि आकाश का ज्ञान प्रत्यक्ष से नहीं होता।

महाभूतों के माध्यम से विश्व की विविध वस्तुओं का निर्माण कैसे होता है – इसका उत्तर चार्वाकों ने "स्वभाववाद"

Scanned by CamScanner

के माध्यम से दिया है। स्वभाववाद के अनुसार महाभूतों का स्वभाव ही यह है कि वे परस्पर मिलकर सृष्टि की विभिन्न वस्तुएँ निर्मित करते हैं, इसके लिए किसी चेतन निमित्त कारण की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जगत् किसी विशिष्ट प्रयोजन का परिणाम नहीं है। इसका निर्माण और विकास यांत्रिकवादी रूप में हुआ है।

आत्मा सम्बन्धी विचार / देहात्मवाद

चार्वाक दर्शन भौतिकवाद का समर्थक है और उसी के अनुरूप नित्य या स्थायी आत्मा को नहीं मानता। उसके अनुसार चैतन्य से युक्त देह ही आत्मा है — "चैतन्य विशिष्टो देह एव आत्मा"। यही विचार देहात्मवाद कहलाता है।

चार्वाक ने दो उपमाओं के माध्यम से देहात्मवाद को समझाया है - जिस प्रकार मदिरा के विभिन्न घटकों अंगूर आदि में कोई मादकता नहीं है किन्तु विशिष्ट अनुपात में मिलने पर उनसे निर्मित मदिरा में मादकता पैदा हो जाती है, उसी प्रकार भौतिक तत्वों में चेतना पैदा होती है। पुनः जिस प्रकार पान, कत्था, चूना और सुपारी लालिमारहित होकर भी पान के रूप में चबाए जाने पर लालिमा पैदा करते हैं, वैसे ही भौतिक तत्व परस्पर संयुक्त होकर चेतना को उत्पन्न करते हैं।

Scanned by CamScanner

चार्वाक की नीतिमीमांसा

चार्वाकों की नीतिमीमांसा सुखवादी है, जो उनके भौतिकवाद का ही तार्किक परिणाम है। चार्वाकों का ख्याल है कि साधारणतः प्रचलित चारों पुरुषार्थों में से 'काम' ही एकमात्र पुरुषार्थ है "काम एवैक: पुरुषार्थ:"। अर्थ का भी महत्व है, पर सिर्फ साधन के रूप में। काम का अर्थ है — सुखों की उपलब्धि। उनके अनुसार, विभिन्न सुखों में गुणात्मक नहीं, केवल मात्रात्मक भेद है। अत: इन्द्रिय सुख भी उतने ही काम्य हैं जितने बौद्धिक या भावनात्मक सुख। चार्वाकों ने 'धर्म' तथा 'मोक्ष' का कठोर खंडन किया है। उनके अनुसार जीवन का उद्देश्य है — यथासंभव सुखों की उपलब्धि कर लेना —

"यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत: ॥"

Scanned by CamScanner